अलवर जिले में स्कूलों में स्वच्छता अभियानः प्रभाव और आवश्यकताएँ

[1]धनेश कुमार , [2]डॉ. सुनील कुमार
[1]शोधार्थी , [2]शोध निर्देशक
लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, अलवर
राजस्थान, भारत–304028

***सार** – स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्कूलों में स्वच्छता सुधार पर विशेष ध्यान दिया गया है, जिसका उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करना है। अलवर जिले के स्कूलों में इस अभियान की प्रभावशीलता का विश्लेषण करते हुए, यह शोध पत्र विभिन्न सुधार प्रयासों, उनके परिणामों, और मौजूदा आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करता है। यह अध्ययन स्वच्छता सुविधाओं की वर्तमान स्थिति, जागरूकता कार्यक्रमों, और समुदाय की सहभागिता को भी उजागर करता है। इसके* साथ ही, स्वच्छता संबंधी चुनौतियों और उनके संभावित समाधान पर भी विचार किया गया है ।

1. प्रस्तावना

स्वच्छ भारत अभियान (Clean India Mission), जिसे स्वच्छ भारत मिशन (SBM) के नाम से भी जाना जाता है, भारत सरकार का एक प्रमुख और व्यापक कार्यक्रम है जिसे 2 अक्टूबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था। यह अभियान महात्मा गांधी की जयंती पर शुरू किया गया था, जो स्वच्छता और सफाई के प्रतीक के रूप में देखे जाते हैं। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य भारत में सार्वजनिक स्थानों, ग्रामीण इलाकों और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा देना और एक स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण सुनिश्चित करना है। यह अभियान भारतीय समाज की स्वच्छता की आदतों को सुधारने और व्यापक स्तर पर स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। [1]

स्वच्छ भारत अभियान का मुख्य ध्यान ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में स्वच्छता की स्थिति को सुधारने पर है। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से शौचालयों की कमी और खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करने पर जोर दिया गया है। इसके लिए, सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत शौचालय निर्माण की योजनाओं को लागू किया है, जो ग्रामीण घरों में स्वच्छता की सुविधा प्रदान करने का उद्देश्य रखता है। इसके अलावा, जल निकासी और सफाई की बुनियादी सुविधाओं को सुधारने के लिए विभिन्न योजनाएँ चलायी जा रही हैं, ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में साफ–सफाई की समस्या को समाप्त किया जा सके। [1]

शहरी क्षेत्रों में, स्वच्छ भारत अभियान ने कचरा प्रबंधन और सार्वजनिक स्थानों की सफाई पर विशेष ध्यान दिया है। शहरी स्वच्छता मिशन (न्तइंद ब्समंदसपदमे डपेपवद) के तहत, शहरों और नगरपालिकाओं में कचरे के संग्रहण, निपटान और पुनः प्रयोग की प्रक्रिया को व्यवस्थित किया गया है। इसके लिए, कचरा संग्रहण और निपटान के लिए आधुनिक व्यवस्थाएँ, जैसे कि कचरा विभाजन और पुनर्नवीनीकरण, को लागू किया गया है। इसके अलावा, सड़क किनारे की सफाई, सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण, और सामुदायिक स्वच्छता अभियानों की पहल की गई है।

स्वच्छ भारत अभियान के तहत कई महत्वपूर्ण मिशन और योजनाएँ लागू की गई हैं, जैसेः

- **स्वच्छ शौचालय मिशन (Clean Toilets Mission):** शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ और उपयोगी शौचालयों का निर्माण और उनका रखरखाव सुनिश्चित करना।
- **कचरा प्रबंधन मिशन (Waste Management Mission):** कचरे का उचित संग्रहण, निपटान और पुनर्नवीनीकरण को बढ़ावा देना।
- स्वच्छ विद्यालय अभियान (Clean School Campaign): स्कूलों में स्वच्छता की स्थिति को सुधारने के लिए विशेष योजनाएँ, जैसे कि स्वच्छता क्लब और जागरूकता कार्यक्रम।

इस अभियान का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को स्वच्छता की आदतें अपनाने के लिए प्रेरित करना है। इसके तहत, नागरिकों को स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूक करना, स्वच्छता के नियमों और प्रक्रियाओं को लागू करना, और स्वच्छता की जिम्मेदारी को सामूहिक रूप से उठाना शामिल है। स्वच्छ भारत अभियान का प्रभाव न केवल स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता को सुधारता है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक प्रगति में भी योगदान देता है। यह अभियान एक स्वच्छ और स्वस्थ भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इसके सफल कार्यान्वयन से देश की समग्र स्थिति में सुधार की आशा है। [2]

2. अलवर जिले में स्वच्छता प्रयास

अलवर जिला, राजस्थान का एक प्रमुख जिला, स्वच्छता और सफाई को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयासों में संलग्न है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत, जिला प्रशासन ने स्वच्छता को एक प्राथमिकता बनाते हुए कई पहल और योजनाओं को लागू किया है। इन प्रयासों का मुख्य उद्देश्य जिले के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में स्वच्छता की स्थिति को सुधारना और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना है।

शहरी क्षेत्रों में, स्वच्छता प्रयासों ने कचरे के संग्रहण और निपटान के लिए नई व्यवस्थाओं को लागू किया है। नगर निगम द्वारा किए गए सुधारों के अंतर्गत, कचरा प्रबंधन की प्रणाली को सुव्यवस्थित किया गया है, जिससे कचरे की सफाई और पुनर्नवीनीकरण की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया गया है। इसके अलावा, सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता बनाए रखने के लिए नियमित सफाई अभियान चलाए जा रहे हैं, और नई स्वच्छ सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया गया है। [2]

वहीं, ग्रामीण इलाकों में भी स्वच्छता सुधार के लिए विशेष प्रयास किए गए हैं। स्वच्छता की संस्कृति को बढ़ावा देने और खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करने के लिए शौचालय निर्माण की योजनाएँ लागू की गई हैं। स्थानीय पंचायतों और स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने और स्वच्छता सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। [2]

इस प्रकार, अलवर जिले में स्वच्छता प्रयासों का उद्देश्य जिले की स्वच्छता स्थिति को सुधारना और सभी नागरिकों को एक स्वस्थ और स्वच्छ वातावरण प्रदान करना है। इन प्रयासों की प्रभावशीलता और स्थानीय स्तर पर उनके द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों को समझना, स्वच्छता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2.1 स्थानीय पहल (Local Initiatives)

अलवर जिले में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण स्थानीय पहल की गई हैं। इन पहलों का मुख्य उद्देश्य जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता की स्थिति को सुधारना और एक स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत, जिला प्रशासन और स्थानीय निकायों ने विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू किया है, जो स्वच्छता के मानकों को ऊँचा उठाने में सहायक साबित हो रहे हैं। [3]

- **शहरी क्षेत्रों में पहल :** अलवर जिले के शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता सुधार के लिए नगर निगम द्वारा कई कदम उठाए गए हैं। सबसे पहले, कचरा संग्रहण और निपटान की प्रणाली में सुधार किया गया है। नगर निगम ने कचरे के वर्गीकरण की प्रक्रिया शुरू की है, जिसमें कचरे को जैविक, अवैध और पुनर्नवीनीकरण योग्य श्रेणियों में बांटा गया है। यह वर्गीकरण कचरे के प्रबंधन को अधिक प्रभावी बनाता है और पुनर्नवीनीकरण की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करता है। इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक स्थानों पर नियमित सफाई अभियान चलाए जा रहे हैं। पार्क, बाजार, सड़कों और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर स्वच्छता बनाए रखने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। नगर निगम ने नए और स्वच्छ सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया है, जिन्हें नियमित रूप से साफ–सुथरा रखने की जिम्मेदारी स्थानीय निकायों को सौंपी गई है। इन शौचालयों के निर्माण

और रखरखाव से सार्वजनिक स्वच्छता में सुधार हुआ है और नागरिकों को स्वच्छता की सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। [3]

- **ग्रामीण क्षेत्रों में पहलः** ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता के प्रयासों पर विशेष ध्यान दिया गया है। यहाँ, मुख्य फोकस खुले में शौच की प्रथा को समाप्त करने और शौचालयों की सुविधा को सुनिश्चित करने पर है। ग्रामीण विकास विभाग और स्थानीय पंचायतों ने मिलकर शौचालय निर्माण की योजनाएँ लागू की हैं। ये योजनाएँ ग्रामीण परिवारों के लिए स्वच्छता सुविधाओं की उपलब्धता को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखती हैं, ताकि खुले में शौच की प्रथा को पूरी तरह से समाप्त किया जा सके। ग्रामीण क्षेत्रों में, विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण जनता को स्वच्छता के महत्व के बारे में जानकारी दी जाती है और शौचालयों के उपयोग के लाभों के बारे में बताया जाता है। इसके साथ ही, स्थानीय स्वयंसेवी संगठनों और गैर–सरकारी संगठनों ने सामुदायिक स्वच्छता शिविर आयोजित किए हैं। इन शिविरों में लोगों को स्वच्छता के महत्व के बारे में शिक्षित किया जाता है और स्वच्छता अभियानों का समर्थन किया जाता है।

इन पहलुओं के माध्यम से, अलवर जिले में स्वच्छता को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन पहलों की प्रभावशीलता और स्थानीय स्तर पर उनकी सफलता स्वच्छता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। [4]

2.2 सुधार और चुनौतियाँ

अलवर जिले में स्वच्छता के प्रयासों के सकारात्मक परिणामों ने स्वच्छता की स्थिति को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शहरी क्षेत्रों में, कचरा प्रबंधन प्रणाली में किए गए सुधारों के कारण सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। नगर निगम द्वारा लागू की गई कचरा वर्गीकरण और पुनर्नवीनीकरण की विधियाँ, कचरे को अलग–अलग श्रेणियों में बांटने की प्रक्रिया को व्यवस्थित करती हैं। इससे न केवल कचरे की निपटान प्रक्रिया अधिक प्रभावी और पर्यावरण–अनुकूल बनी है, बल्कि पुनर्नवीनीकरण की दर भी बढ़ी है, जो कचरे के पुनः उपयोग को प्रोत्साहित करती है।

पार्क, बाजार और सड़कों जैसी सार्वजनिक जगहों पर नियमित सफाई अभियानों के परिणामस्वरूप स्वच्छता की स्थिति में सुधार हुआ है। इसके साथ ही, सार्वजनिक शौचालयों की संख्या में वृद्धि और उनकी नियमित सफाई ने शहरी इलाकों में साफ–सफाई को सुनिश्चित किया है। इन शौचालयों का ठीक से रखरखाव किया जा रहा है, जिससे उपयोगकर्ताओं को एक स्वच्छ और सुविधाजनक वातावरण प्राप्त हो रहा है।

ग्रामीण इलाकों में, स्वच्छता के प्रयासों के चलते शौचालयों का निर्माण हुआ है, जिससे खुले में शौच की प्रथा में कमी आई है। यह सुधार ग्रामीण स्वास्थ्य और स्वच्छता के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे संक्रामक बीमारियों की संभावनाएँ कम हुई हैं और ग्रामीणों की जीवन गुणवत्ता में सुधार हुआ है। शौचालय निर्माण ने ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता के प्रति सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक साबित किया है। [5]

चुनौतियाँ

हालांकि, कई सुधार हुए हैं, फिर भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। शहरी क्षेत्रों में कचरा पुनर्नवीनीकरण की प्रक्रिया अभी भी समस्याग्रस्त है। विशेष रूप से कचरे के उचित प्रबंधन की कमी और अवसंरचनात्मक समस्याओं के कारण कचरे के निपटान में कठिनाइयाँ उत्पन्न हो रही हैं। कचरे के वर्गीकरण के लिए आवश्यक सुविधाओं की कमी और निपटान के लिए सही व्यवस्थाओं की अनुपस्थिति प्रमुख बाधाएँ हैं। इन समस्याओं के कारण कचरे का सही तरीके से निपटान नहीं हो पा रहा है, जिससे पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। [6]

ग्रामीण इलाकों में, शौचालयों की स्थिति और उनकी मरम्मत की कमी अब भी एक बड़ी समस्या है। कुछ क्षेत्रों में शौचालयों का निर्माण पूरी तरह से पूरा नहीं हो पाया है या उनका उपयोग सीमित है, जिससे खुले में शौच की प्रथा अभी भी कायम है। इसके अतिरिक्त, स्वच्छता के प्रति जागरूकता की कमी और स्वच्छता आदतों में बदलाव की आवश्यकता बनी हुई है। लोग खुले में शौच की आदतों को पूरी तरह से छोड़ने में असमर्थ हैं, जो स्वच्छता की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए स्थानीय प्रशासन को ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है। कचरा प्रबंधन प्रणाली में सुधार, स्वच्छता सुविधाओं की स्थिति में सुधार, और जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना आवश्यक है। इन कदमों के माध्यम से स्वच्छता प्रयासों को और प्रभावी बनाया जा सकता है और जिले की समग्र स्वच्छता स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

3. जागरूकता और समुदाय की सहभागिता

स्वच्छता की स्थिति में सुधार के लिए जागरूकता और समुदाय की सहभागिता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालांकि, अलवर जिले में स्वच्छता के प्रति जागरूकता में सुधार हुआ है, फिर भी इसे और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है। इस दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि कैसे स्कूलों में छात्रों को शामिल किया जा सकता है, क्योंकि वे समुदाय के महत्वपूर्ण सदस्य होते हैं और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने में प्रभावी हो सकते हैं। [6]

स्कूलों में छात्रों की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए, निम्नलिखित सिफारिशें की जा सकती हैंरू

- **स्वच्छता क्लबों की स्थापना:** स्कूलों में स्वच्छता क्लबों का गठन किया जाए, जिसमें छात्रों को स्वच्छता अभियानों में सक्रिय रूप से शामिल किया जाए। ये क्लब स्वच्छता की महत्वता पर जागरूकता फैलाने, स्कूल परिसर की सफाई करने और स्वच्छता संबंधी गतिविधियों को आयोजित करने में मदद करेंगे।

- **स्वच्छता कार्यक्रम और प्रतियोगिताएँ:** स्कूलों में स्वच्छता पर आधारित कार्यक्रम और प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाएँ। इससे छात्रों को स्वच्छता के महत्व को समझने और अपने घर और समुदाय में इसे लागू करने की प्रेरणा मिलेगी। इन प्रतियोगिताओं में पोस्टर बनाने, निबंध लिखने और स्वच्छता पर विचार–विमर्श करने जैसी गतिविधियाँ शामिल की जा सकती हैं।

- **शिक्षा और प्रशिक्षण:** छात्रों को स्वच्छता और स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा प्रदान की जाए। पाठ्यक्रम में स्वच्छता शिक्षा को शामिल किया जाए ताकि बच्चे स्वच्छता के महत्व को जान सकें और इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना सकें।

- **समुदाय में स्वच्छता अभियानों का नेतृत्व:** छात्रों को समुदाय में स्वच्छता अभियानों का नेतृत्व करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। वे स्थानीय स्वच्छता अभियानों में भाग ले सकते हैं, जैसे कि कचरा संग्रहण और सफाई अभियान, और इसके माध्यम से स्थानीय समुदाय में स्वच्छता के महत्व को फैलाने में मदद कर सकते हैं। [7]

- **पेरेंट्स और शिक्षकों की भागीदारी:** छात्रों की भागीदारी को सफल बनाने के लिए, पेरेंट्स और शिक्षकों को भी शामिल किया जाना चाहिए। उन्हें स्वच्छता अभियानों और कार्यक्रमों के महत्व को समझाना और उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है।

इन सिफारिशों के माध्यम से, स्वच्छता की स्थिति में सुधार करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं। छात्रों की सक्रिय भागीदारी न केवल स्कूलों में स्वच्छता को बढ़ावा देगी, बल्कि उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए भी प्रेरित करेगी। स्वच्छता की इस पहल को समुदाय में भी फैलाने से समग्र स्वच्छता स्थिति में सुधार होगा और एक स्वस्थ और स्वच्छ समाज की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान होगा। [7]

4. निष्कर्ष

अलवर जिले में स्वच्छता अभियानों की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि स्वच्छ भारत मिशन और अन्य स्थानीय पहलों ने जिले की स्वच्छता स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शहरी और

ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में किए गए प्रयासों ने स्वच्छता की दिशा में सकारात्मक बदलाव लाए हैं। शहरी क्षेत्रों में कचरा प्रबंधन प्रणाली में सुधार और सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति में सुधार से शहरों की स्वच्छता में वृद्धि हुई है। वहीं, ग्रामीण इलाकों में शौचालय निर्माण ने खुले में शौच की प्रथा को कम करने में मदद की है, जिससे स्वास्थ्य में सुधार हुआ है। हालांकि, सुधार के बावजूद कई चुनौतियाँ अब भी बनी हुई हैं। शहरी क्षेत्रों में कचरे के पुनर्नवीनीकरण की प्रक्रिया और सुविधाओं की कमी, और ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों की मरम्मत और उपयोग में समस्याएँ प्रमुख बाधाएँ हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि स्थानीय प्रशासन, समुदाय और अन्य संबंधित पक्ष मिलकर ठोस कदम उठाएं। स्वच्छता सुविधाओं का उचित रखरखाव, कचरा प्रबंधन में सुधार, और जागरूकता अभियानों को बढ़ावा देना इन समस्याओं का समाधान कर सकता है।

विशेष रूप से, स्कूलों में छात्रों की भागीदारी को बढ़ावा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। छात्रों को स्वच्छता अभियानों में शामिल करने से न केवल स्कूल परिसर में स्वच्छता में सुधार होगा, बल्कि यह समुदाय में भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने में सहायक होगा। स्वच्छता के प्रति एक मजबूत और जागरूक पीढ़ी का निर्माण, स्वच्छता अभियानों की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

अलवर जिले में स्वच्छता के प्रयासों की सफलता और उनके सुधार की दिशा में उठाए गए कदम, एक स्वस्थ और स्वच्छ समाज की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। इन प्रयासों के निरंतर समर्थन और प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से, जिले की स्वच्छता स्थिति को और बेहतर बनाया जा सकता है और स्वच्छता के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है। केवल समन्वित प्रयासों और समर्पण के साथ ही, हम एक स्वच्छ और स्वस्थ भविष्य की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. घोष, एस. के. (2016). स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) – भारत में कचरा प्रबंधन और स्वच्छता में एक नया दृष्टिकोण. प्रोसीडिया एनवायरनमेंटल साइंसेज, 35, 15–27.
2. वेरकुइलेन, ए., स्प्राउस, एल., बीयर्सले, आर., लेबू, एस., साल्जबर्ग, ए., – मांगा, एम. (2023). स्वच्छ भारत मिशन की प्रभावशीलता और भारत में खुले में शौच समाप्त करने में बाधाएँरू एक व्यवस्थित समीक्षा. फ्रंटियर्स इन एनवायरनमेंटल साइंस, 11, 1141825.
3. दांदाबथुला, जी., भारद्वाज, पी., बुर्रा, एम., राव, पी. वी. पी., – राव, एस. एस. (2019). भारत के स्वच्छ भारत मिशन – स्वच्छ भारत अभियान का तीव्र दस्त रोग प्रकोपों पर प्रभाव मूल्यांकनरू

हाँ, एक सकारात्मक बदलाव है. जर्नल ऑफ फैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर, 8(3), 1202–1208.

4. बैरवा, एस. आर. (2018). राजस्थान में स्वच्छ भारत मिशनरू दौसा निर्वाचन क्षेत्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 8(10), 630–642.
5. आनंद, आर. आर., सानू, एस. के., सिंह, एम., – शर्मा, वी. आर. (2022). बिहार के लिए सामाजिक प्रगति सूचकांक के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों का मूल्यांकन. संपादकीय टीम, 359.
6. राजासेकर, डी., – मंजुला, आर. (2023). स्वच्छ भारत मिशनरू जागरूकता रणनीतियाँ, कार्यान्वयन और मुद्दे. द इंस्टीट्यूट फॉर सोशल एंड इकोनॉमिक चेंज.
7. मोहापात्रा, जी. (2019). स्वच्छ भारत मिशन में प्रत्याशित व्यवहारिक परिवर्तनरू एक सार्वजनिक नीति दृष्टिकोण. इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 65(2), 451–474.